International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 04-05

दलित राजनीति पृथक्करण की राजनीति न होकर, सर्वसमावेश की राजनीति है

प्रेम सिंह
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक लोकतान्त्रिक भारत में दलित राजनीति का उदय बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से माना जा सकता है। यह शताब्दी दलित राजनीति के लिये प्रभात की किरण लेकर आयी थी। आधुनिक लोकतान्त्रिक भारत के पिता विश्वरत्न बाबासाहेब डॉ0 भीमराव रामजी अम्बेड़कर ने दलित रातनीति की नींव रखी। विश्वरत्न बाबासाहेब ने उन करोड़ों दबे कुचले लोगों को जिन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था, समाज में समानता का अधिकार दिलाया और उनके जीवन में खुशी की लहर का संचार किया। यही वह प्रथम दौर है जहाँ से दलित राजनीति का उदय हुआ। विश्वरत्न बाबासाहेब ने जिन करोड़ों दलितों को रास्ते पर चलने का भी अधिकार न था, उन्हें सभी अधिकारों को दिलाया और उनके समस्त बन्धनों को काटकर भारतीय राजनीति का अभिन्न अंग बना दिया। और करोड़ों दलितों को मताधिकार दिला दिया। विश्वरत्न बाबासाहेब के समय दलित राजनीति संगठित अवस्था में थी। विश्वरत्न बाबासाहेब के महापरिनिर्वाण के पश्चात् दलित राजनीति ने एक नवीन मोढ़ लिया। सम्पूर्ण भारत वर्ष के सभी राज्यों में अनेक पार्टियों का गठन हुआ। जिनमें दलित राजनीतिक पार्टियाँ भी सम्मिलित थीं। जिन दलित राजनीतिक पार्टियों का गठन हुआ उनमें उत्तरप्रदेश में माननीय कांशीराम साहेब ने बहुजन समाज पार्टी का गठन करके दलित राजनीति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसका प्रमुख कारण था माननीय कांशीराम साहेब का विश्वरत्न बाबासाहेब के विचारों, आदर्शों एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर चलना। महाराष्ट्र में रामदास आठवले ने रिपब्लिकन पार्टी, बिहार में रामविलास पासवान ने लोक जनशक्ति पार्टी तथा दक्षिण में एक दो दलित पार्टी आदि अनेक अन्य पार्टियों का गठन तो हुआ परन्तु उनका लक्ष्य विश्वरत्न बाबासाहेब के आदर्शो के विपरीत ही दृष्टिगोचर होता है। दलित राजनीति में सबसे अधिक पहल माननीय कांशीराम साहेब एवं बहन कुमारी मायावती ने की। इन दोनों ने ही विश्वरत्न बाबासाहेब के आदर्शों को ध्यान में रखकर कार्य किया। बहुजन दलित समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक आदि विकास को सामने रखते हुए कार्य किया। जिस प्रकार विश्वरत्न बाबासाहेब ने बहुजन दलितों के हितों को ध्यान में रखकर कानून के मन्त्री पद से स्थीफा दे दिया था, वही काम माननीय बहन कुमारी मायावती ने राज्य सभा से दलित शोषित समाज की सदन के सम्मुख बात न रखने देने के कारण स्थीफा दे दिया था। वर्तमान में बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय बहन कुमारी मायावती को छोड़कर अन्य सभी दलित पार्टियाँ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुछ तो कांग्रेस में मिल गये और कुछ भाजपा में मिल गये। इन दलित नेताओं के भाजपा आदि में चले जाने से दलित राजनीति धरासायी हो गयी है। विश्वरत्न बाबासाहेब ने एक समय कहा था कि हे मेरे दलित वीरों! तुम गलती से भी कांगेस का चार आने को सदस्य मत बनना परन्तु आज तो कांग्रेस और भाजपा में जाने की होड़ लगी हुई है।

आज भारत की प्रत्येक पार्टी का ध्यान दलितों की वोटों की तरफ है। सभी राजनीतिक पार्टियाँ बाबासाहेब की जयन्ती पर मगरमच्छ के आँसु रोती हैं। ये राजनीतिक पार्टियाँ दलितों की वोट जिस भी तरिके से मिलें उन सभी तरिकों को अपनाती हैं फिर चाहे वह दलित नेता ही क्यों न हों। आज दलित नेताओं के भाजपा आदि में चले जाने से दलित राजनीति को जो चोट पहुँची है वह असहनीय है। वर्तमान की दलित राजनीति को यदि मैं हाशिये पर पहुँची हुई राजनीति भी कहुं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। वर्तमान दलित राजनीति अपने जनक विश्वरत्न बोधिसत्व डॉ0भीमराव अम्बेड़कर के आदर्शों, लक्ष्यों एवं मूल्यों को पूरी तरह से विचलित हो गई है। आज उन्हीं दलितों में से बाहर निकले हुए दलित नेता जिनके अधिकारों एवं समानता के लिए बाबासाहेब ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, विश्वरत्न बाबासाहेब की वंचना कर रहें हैं। आज दलित नेता अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए भाजपा की चाटुकारिता में लगे हुए हैं। हाल ही के गुजरात के चुनाव में दलित नेता इस हद तक गिर गये कि चुनाव से पहले तो वह अपने को विश्वरत्न बाबासाहेब के आदर्शों एवं लक्ष्यों का अनुगमन कर्ता एवं दलितों का हितैशी कह रहे थे परन्तु जीत के बाद में वे ही दलित नेता कांग्रेस आदि अन्य पार्टियों की मिलकर विश्वरत्न बाबासाहेब के अम्बेड़करवाद की निन्दा करते हैं। एक बात उन दलित नेताओं को जहन में उतार लेनी चाहिए कि निन्दा मार्क्स के अफीमवादी सिद्धान्त की हो सकती है अम्बेड़करवादी वैज्ञानिक सिद्धान्त की नहीं। ये दलित नेता आरक्षित सीट से जीतकर विश्वरत्न बाबासाहेब की निन्दा करें उनका अशोभनीय कृत्य है और ये दोहरे मापदण्ड़ दलित राजनीति को दिन प्रतिदिन गिरा रहे हैं। यहां तक कि दलित नेता व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए कांगेस एवं भाजपा आदि के तलवे चाट रहे हैं।

भारत की कुल आबादी का चौथाई भाग दलितों का हैं। इतनी बड़ी आबादी होने के बावजूद भी दलित राजनीति शून्य से भी कम है। इतनी बड़ी आबादी की तो शासन में महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए परन्तु परिणाम इसके बिलकुल विपरीत हैं। केवल एक पार्टी ही ऐसी दलित पार्टी जिसने कभी किसी पार्टी की चाटूकारिता नहीं की और वह है –बहुजन समाज पार्टी। दलितों की अन्य जो पार्टियाँ हैं वे कांग्रेस एवं भाजपा की चाटूकारिता में तन मन से संलग्न हैं। बहुजन पार्टी के निर्माता माननीय कांशीराम साहेब ने बहुजन दलितों को नारा दिया कि–बाहर निकलो बन्द मकानों से! जंग लड़ो बेईमानों सें!! परन्तु गुजरात के एक दलित नेता जिग्नेश मेवाणी बहुजन दलितों को नारा देते हैं कि– लाल नीला एक है! बहुजन साला फेक है!! आज जिग्नेश मेवाणी ही नहीं सभी दलित नेताओं का यही हाल है। माननीय कांशीराम साहेब ने ऐसे दलित नेताओं

को चमचा की संज्ञा दी है। माननीय कांशीराम साहेब ने अपनी पुस्तक चमचा युग में चमचों के भी छः प्रकार बताये हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. जाति या समुदायवार चमचेः– इस प्रकार के चमचे वे हैं जिन्होंने संघर्ष करके उज्ज्वल युग में प्रवेश तो किया परन्तु गांधी और कांग्रेस ने उन्हें अनिच्छुक चमचा बना दिया।
2. पार्टीवार चमचेः– ये चमचे अपने आपको दलिय अनुशासन में जकड़ा होने का हवाला देकर समाज विरोधी कार्य करते रहते हैं।
3. अबोध या अज्ञानी चमचेः– इस प्रकार के वे चमचे हैं जो अपने शोषकों को ही अपना उद्धारक समझने की भूल करते हैं।
4. ज्ञानी या अम्बेड़करवादी चमचेः– इस प्रकार के वे लोग हैं जो बडी बड़ी बाते करते हैं और विश्वरत्न बाबासाहेब को कोड़ भी करते हैं परन्तु उनका आचरण सर्वदा इसके विपरीत ही होता है।
5. चमचों के चम्मचः– ये राजनीतिक चमचे अपनी जाति या समुदाय में पैठ बनाने के लिए अपनी चम्मच बनाते हैं जो शासक जातियों की पूरी सेवा पाने के लिए तत्पर रहते हैं। शिक्षित नौकरी पेशा वाले लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए इन चमचों की भी चमचागीरी करते हैं।
6. विदेशी चमचेः– विदेशों में रहने वाले अछूत जिन्हें लगता है कि भारत में चमचों की कमी पड़ रही है तो ये चमचे भारत में आकर शासक जाति की चमचागीरी चालू करते हैं।

आज देश के जितने भी दलित नेता हैं सुश्री बहन कुमारी मायावती को छोड़कर सभी कांग्रेस और बीजेपी की चमचागीरी करने में ही अपना हित साधते हैं। भविष्य में इस चमचागीरी का परिणाम सम्पूर्ण बहुजन दलित समाज के लिए अनन्त रूपों से घातक होगा यह बात पूर्णतः निश्चित है। दलित नेता जिग्नेश मेवाणी अपने विचार विश्वरत्न बाबासाहेब से भिन्न बताता है। इसका क्या पर्याय है ? इसका पर्याय केवल इतना ही समझा जा सकता है कि कांग्रेस उससे ऐसा कहने के लिए कहती है। कांग्रेस आज भी लगातार विश्वरत्न बाबासाहेब का विभिन्न हथकंड़े अपनाकर अपमान कराती रहती है। परन्तु ये बिलकुल साफ है कि एक बार विश्वरत्न बाबासाहेब के सामने गाँधी खड़े हुए थे और आज गाँधी हासिये पर पहुँ गए। यदि कोई अन्य भी सामने खड़ा होगा तो उसका भी वही होगा जो गाँधी का हुआ था। अम्बेड़करवाद का सैलाव दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। विश्वरत्न बाबासाबहेब के भक्त नहीं हैं अपितु अनुयायी है। चूंकि भक्ति की दीवार श्रद्धा पर टिकी होती है और अनुयायी की दीवार वैज्ञानिकता और तर्क पर। एक चुनाव में विश्वरत्न बाबासाहेब के सामने गांधी एण्ड कम्पनी जगजीवन राम को खडा किया था जिसमें बाबासाहेब चुनाव हार गये थे, तब विश्वरत्न बाबासाहेब ने कहा था कि यह आशंका मुझे पूर्व में ही थी कि गांधि एण्ड कम्पनी मेरे सामने मुझे हराने के लिए किसी अछूत को ही खडा करेगी। इसीलिए मैं पृथक् निर्वाचक मण्डल की मांग कर रहा था। चूंकि भविष्य में भी गांधी एण्ड कम्पनी ऐसा ही करेगी और पुनः पुनः दलितों को मोहरा के रूप में प्रयोग करती रहेगी। विश्वरत्न बाबासाहेब इस पर बहुत दुखी हुए थे। विश्वरत्न बाबासाहेब का यह भी मानना था कि वर्तमान मतदान प्रणाली दलित बहुजन को अपना सच्चा हितैशी जो उनके सामाजिक उत्थान के लिए पूर्ण समर्पित होगा, के चुनाव में काम नहीं आयेगी। हिन्दू जिन आरक्षित सीटों पर दलित बहुजन को खडा करेंगे वे दलितों के नहीं वरन् हिन्दूओं के चमचे होंगे। विश्वरत्न बाबासाहेब ने जब जो कुछ कहा वह आज वर्तमान में पूर्णतः दृष्टिगोचर हो रहा है। यदि सभी बहुजन दलित और बहुजन दलित नेता एकजुट नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं है जब उसे वहीं पहुँच जाना है जहाँ से वह विश्वरत्न बाबासाहेब ने उठाया था चूंकि विघटन सदैव ही विनाश का कारण होता है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए जिस गति से दलित नेता कांगेस और बीजेपी में जा रहे हैं क्या इससे वे कभी देश के शासक बन पायेंगे ? क्या वे कभी देश की बागडोर अपने हाथों में ले पायेंगे ? यह एक चिन्ता का विषय है कि देश के समस्त दलित नेता कांग्रेस और बीजेपी जा चूके हैं। यद्यपि यह समय सभी दलित नेताओं के लिए देश के शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने है परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। देश की राजनीति में बहुजन दलित समाज के नेताओं का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है और न ही उनका कोई कार्य दलित हित में हुआ है। 1952 में विश्वरत्न बाबासाहेब ने कहा था कि –किसी भी राजनीतिक पार्टी का काम केवल चुनाव जीतना मात्र नहीं है, बल्कि यह लोगों को शिक्षित करने एवं संगठित करने का होता है। परन्तु दलित नेताओं ने विश्वरत्न बाबासाहेब के आदर्शों को विस्मृत कर दिया है। सभी दलित नेताओं ने यदि इस वर्तमान परिस्थिति को भी नहीं पहचाना तो दलित राजनीति का पतन तो हो ही गया है, उसका पूर्ण नाश भी कुछ ही समय बाद देख लेंगे। इसलिए समस्त बहुजन दलित एक सूत्र होकर देश की राजनीति में भाग लें। चूंकि दलित राजनीति पृथक्करण की राजनीति नहीं है। सभी दलित नेताओं के पृथक् पृथक् हो जाने से वे कभी भी देश में स्वसाम्राज्य स्थापित नहीं कर सकते और न ही किसी अन्य राजनीति पार्टी से जुड़कर। विश्वरत्न बाबासाहेब ने समस्त बिखरे हुए बहुजन दलित समाज को एक होने का मार्ग बताया था। विश्वरत्न बाबासाहेब ने जो तीन रत्न –शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो, उन्हें पुनः दोहराने की जरूरत है और सभी दलित नेताओं को आज संगठित होने की बहुत जरूरत है। चूंकि दलित राजनीति पृथक्करण की राजनीति न होकर, सर्व समावेश की राजनीति है।

सन्दर्भ

1. बाबासाहेब डॉ.अम्बेड़कर सम्पूर्ण वाड़मय, बहुजन नायक कांशीराम कृत चमचा युग, राष्ट्रपिता ज्योतिबाराव फुले कृत गुलामगीरी आदि।